

Government of India. **India 2021**. Delhi, Ministry of Information and Broadcasting; 2021: 799 p.

India 2021 Year Book is a reference book, having all the information of the central government schemes, programmes and policies. Information of states and UTs are also included in the book. It deals with all aspects of development – from rural to urban, industry to infrastructure, science and technology to art and culture, economy, health, defence to education and mass communication. It also includes general knowledge, current affairs, sports and important events.

Hall, Budd L. and Tandon, Rajesh (eds.). **Higher Education: International Perspectives on Knowledge Democracy**. Leiden, Brill Sense; 2021: 331p.

The book Higher Education: International Perspectives on Knowledge Democracy shares the experiences of a broadly representative and globally dispersed set of writers on higher education and social responsibility, broadening perspectives on the democratization of knowledge. The editors have sought examples and viewpoints from parts of the world that are rarely heard in the international literature. The book achieves a gender and diversity balance among the contributors. The stories call us to take back the right to imagine and reclaim the public purposes of higher education.

Helpage India and Ipsos Research Private Limited. **The silent tormentor: covid 19 and the elderly – The HelpAge India Report 2021**. Gurugram, Ipsos Research Private Limited; 2021: 70p.

This report throws light on areas that need focus and some aspects that need preparation, as we progress as a nation. The report has four sections, which looks into how elders responded to the COVID complications - both in a household setting and in a formal/institutional setting (old age homes), and how their caregivers felt about the COVID challenge and its impact on their ability to care for the elderly, across formal/institutional and informal settings. The one thing that stands out across the report both among elders in informal and formal settings is that, elder abuse continues to remain a major area of concern. Its attributes are seeing some changes for instances, this year, verbal abuse has increased across household settings.

It may be on account of the pressures of working from home which has restricted the space that elders had earlier or the impact of job losses and the responsibility of elder care in such scenarios on care givers. Nevertheless, the percentage of elders reporting abuse remains high and that is a point of deep concern. What is however intriguing is that the elderly remain beacons of hope for a younger generation that has hit in terms

of their ability to think of a better future.

NITI Aayog. **SDG India Index and Dashboard 2020–21: Partnerships in the Decade of Action**. Delhi, NITI Aayog; 2021.

The index is the primary tool for monitoring progress on the SDGs (Sustainable Development Goals) in the country. The index represents the expression of the comprehensive nature of the Global Goals under the 2030 Agenda while being familiar to the national priorities. It estimates progress of States and UTs on the nature of the Goals, including health, education, gender, economic growth, institutions, climate change and environment.

United Nations Population Fund. **State of World Population 2021 - My Body is My Own**. New York, United Nations Population Fund; 2021: 164p.

The report highlights the emerging issues in the field of sexual and reproductive health and rights, bringing them into the mainstream and exploring the challenges and opportunities they present for international development. The report reveals how serious many of the shortfalls in bodily autonomy are; many have worsened under the pressures of the COVID-19 pandemic.

The report tells that:

- Only 55 per cent of women are fully empowered to make choices over health care, contraception and the ability to say yes or no to sex.
- Only 71 per cent of countries guarantee access to overall maternity care.
- Only 75 per cent of countries legally ensure full, equal access to contraception.
- Only about 80 per cent of countries have laws supporting sexual health and well-being.
- Only about 56 per cent of countries have laws and policies supporting comprehensive sexuality education.
- Twenty countries or territories have “marry-your-rapist” laws, where a man can escape criminal prosecution if he marries the woman or girl he has raped.
- Forty-three countries have no legislation addressing the issue of marital rape (rape by a spouse).
- More than 30 countries restrict women’s right to move around outside the home.

Girls and boys with disabilities are nearly three times more likely to be subjected to sexual violence, with girls at the greatest risk.

The report shows how efforts to address abuses can lead to further violations of bodily autonomy.

Compiled by **Neha Gupta**  
Librarian-cum-Documentation Officer

# IAEA NEWSLETTER

Vol. 30 No. 2 Re. 1 per copy April-June 2021 Total Pages 8



## Indian Adult Education Association

### अलविदा प्रोफेसर गर्ग

दिनांक 13 मई 2021 को वैश्विक महामारी शैक्षिक जगत विशेषरूप से समस्त प्रौढ़ शिक्षा परिवार को एक गहरा सदमा दे गई। इसी दिन भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के संरक्षक एवं प्रौढ़ शिक्षा जगत के पुरोधा और वटवृक्ष प्रोफेसर भवानी शंकर गर्ग इस नश्वर संसार को अलविदा कह गये। 93 वर्षीय प्रो. गर्ग जीवन के अंतिम क्षणों तक स्वस्थ, सजग और सक्रिय थे। उदयपुर स्थित अपने पैतृक निवास में स्वास्थ्य लाभ कर रहे प्रो. गर्ग मात्र कुछ ही दिनों पहले कोविड-19 से संक्रमित हुए और अचानक ही इहलोक छोड़ स्वर्ग को सिधार गये। 15 अगस्त 1928 को तत्कालीन सीतामऊ के एक छोटे से गांव भगोर में जन्मे प्रो. गर्ग ने अपने जीवन में शून्य से शिखर तक की यात्रा तय की। बचपन से ही एक कर्मनिष्ठ और स्नेहिल स्वभाव के धनी प्रो. गर्ग की शिक्षा और सामाजिक विकास में गहरी रुचि थी जिसे उन्होंने अपने सत्त पुरुषार्थ से सींचा और कतिपय अंसभव से दिखने वाले लक्ष्यों को भी सहज ही प्राप्त किया। मात्र 19 वर्ष की अवस्था में राजस्थान विद्यापीठ के एक सामान्य कार्यकर्ता के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन प्रारंभ करने वाले प्रो. गर्ग ने अपनी समझ-बूझ, सृजनशीलता, दूरदर्शिता, कर्मठता और सभी को साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति के कारण न केवल इसके चांसलर बने वरन् राजस्थान विद्यापीठ को देश के एक अग्रणी शैक्षिक संस्थान के रूप में स्थापित करने में अपना महत्वपूर्ण और निर्णायक योगदान दिया तथा स्वयं को भी शैक्षिक जगत के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में विकसित किया।



निभायी। 15 अगस्त 1994 से लेकर 4 अगस्त 2014 तक वे प. जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के चांसलर रहे। वे कई वर्षों तक साक्षरता निकेतन लखनऊ के प्रबंधन की सर्वोच्च ईकाई 'ग्रुप ऑफ फाइव' के सदस्य भी रहे। इतना ही नहीं उन्होंने विश्व के कई देशों यथा मिश्र, बेंकाक, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, श्रीलंका, टर्की, आस्ट्रिया, फ्रांस, नार्थ आयरलैंड, जर्मनी, चीन, ब्रिटेन और अमेरिका का कई बार दौरा कर वहां के शिक्षा व्यवस्था की गहनता, व्यापकता एवं उपादेयता को समझा। इस प्रकार व्यापक अनुभव और विलक्षण यादाश्त के धनी प्रो. गर्ग इस लंबे दौर में तमाम शिक्षाविदों के लिए एक ऐसे जीवंत संग्रहालय के रूप में विकसित हुए जो सभी अध्येताओं के लिए सहज उपलब्ध थे एवं विकास की सभी कड़ियों को चरणवद्ध तरीके से एक-दूसरे से जोड़ सकते थे। श्री जनार्दन राय नागर, डॉ. अमरनाथ झा, श्री एस.सी. दत्ता, सरदार सोहन सिंह, डॉ. मोहन सिंह मेहता, भाई भगवान जैसे अनेक मूर्धन्य विद्वानों से उनके सहज सरोकार रहे। भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, साक्षरता निकेतन लखनऊ और राजस्थान विद्यापीठ तीनों का मार्गदर्शन करते हुए प्रो. गर्ग ने प्रौढ़ शिक्षा के उन तमाम आयामों को विकसित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया जिसके कारण भारत में प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा एक जन आन्दोलन का स्वरूप प्राप्त कर सका। प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदानों के मद्देनजर सन् 2003 में उन्हें प्रसिद्ध नेहरू साक्षरता पुरस्कार तथा वेल्दी फिशर सम्मान से सम्मानित किया गया।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ से उनका संबंध सन् 1985 में प्रारंभ हुआ जब वे इसके उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। सन् 1988 से 2001 और 2011 से 2013 तक अध्यक्ष तथा 2014 से अपने जीवन के अंतिम क्षण तक वे संरक्षक की भूमिका में संघ के कार्य को अपना मार्गदर्शन प्रदान करते रहे। सन् 1947 से प्रारंभ हुए अपने सक्रिय अकादमिक जीवन में उन्होंने स्वाधीनोत्तर भारत के शैक्षिक जगत में हुए अभूतपूर्व परिवर्तनों के हर चरण में सक्रिय भागीदारी

प्रो. गर्ग के जीवन के तमाम पहलू भावी पीढ़ी को लंबे समय तक मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। अतः उनका गहन अध्ययन किया जाना आवश्यक होगा। ऐसे स्नेहिल और मूर्धन्य विद्वान का चला जाना भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। समस्त प्रौढ़ शिक्षा परिवार दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता है।

Printed, Published & Edited by Dr. Madan Singh on behalf of Indian Adult Education Association, 17-B, Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002 and Printed at M/s. Prabhat Publicity, 2622, Kucha Chelan, Darya Ganj, New Delhi - 110 002. [Tel: 011-23379306 / 23378206 / 23379282 / 23378436 / 43489048]  
E-mail: iaeadelhi@gmail.com, Website: iaea-india.in

Editor: Dr. Madan Singh



## डॉ. एम.एस. राणावत का आकस्मिक निधन

एक स्वस्थ, कर्मठ एवं अनुशासित जीवन जीने वाले भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष तथा नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ के मानद निदेशक डॉ. मनोहर सिंह राणावत रोज की भांति दिनांक 10 अप्रैल 2021 को भी अपने निवास के निकट स्थित कार्यालय में नियमित कार्य में जुट गये। पर नियति को कुछ और ही मंजूर था। अचानक ही वे शारीरिक रूप से अत्यंत असहज महसूस करने लगे। उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया पर मार्ग में ही उन्होंने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। उनके आकस्मिक निधन का समाचार पाकर भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के सभी कार्यकर्ता स्तब्ध, दुःखित और सदमे में आ गये। स्वर्गवास से मात्र दो दिन पूर्व 8 अप्रैल 2021 को वे दिल्ली में थे और संघ के अध्यक्ष के नाते उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से बातचीत की और उनका मार्गदर्शन किया। वापस लौटते हुए उन्होंने शीघ्र ही दोबारा आने का वायदा किया था पर विधि ने शायद कुछ और ही निर्धारित कर रखा था।



दिनांक 19 जुलाई 1949 को उदयपुर (राजस्थान) के कूचोली गांव के एक सम्राट परिवार में जन्मे डॉ. राणावत ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से इतिहास विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। तदुपरांत विक्रम

विश्वविद्यालय, उज्जैन से सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रघुवीरसिंह के निर्देशन में सन् 1980 में उन्होंने "इतिहासकार गुहणोत नैणसी और उसके इतिहास ग्रन्थ" पर पी.एच.डी की।

अपने व्यावसायिक जीवन के दौरान डॉ. राणावत श्रमजीवी कॉलेज, अजमेर (राजस्थान), भारतीय अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तहत सीतामऊ परियोजना तथा श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ में कार्यरत रहे। वर्तमान में वे श्री नटनागर शोध संस्थान के मानद निदेशक थे। 11 मार्च 2000 को उन्होंने भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की आजीवन सदस्यता ग्रहण की। इसके बाद वे लगातार संघ की गतिविधियों में सक्रियता के साथ भाग लेते रहे। सन् 2008 से 2010 तक वे संघ के कोषाध्यक्ष और 2011 से 2020 तक उपाध्यक्ष रहे। इसी दौरान सन् 2019-2020 में उन्होंने भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के कार्यकारी अध्यक्ष का दायित्व भी संभाला। 2021 में वे भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के अध्यक्ष निर्वाचित होने के साथ ही साथ साक्षरता निकेतन लखनऊ के प्रबंधन की सर्वोच्च ईकाई 'ग्रुप ऑफ फाइव' के सदस्य भी बने। एक प्रख्यात इतिहासकार के रूप में डॉ. राणावत ने अनेक पुस्तकें लिखी एवं कई पुस्तकों का संपादन किया जिन्हें अकादमिक जगत में वर्षों तक पढ़ा जायेगा।

डॉ. मनोहर सिंह राणावत जैसे कर्मठ व्यक्तित्व का यूं चले जाना परिवारजनों के साथ ही साथ अकादमिक जगत एवं भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के लिए भी अपूर्णीय क्षति है। हम सभी परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा के मोक्ष एवं शांति हेतु प्रार्थना करते हैं।

## नूतनेश चन्द्र पंत का निधन

सन् 1990 से 1997 तक भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ के उपाध्यक्ष रहे श्री नूतनेश चंद्र पंत भी अब हमारे बीच नहीं रहे। गत 21 अप्रैल 2021 को उनका स्वर्गवास हो गया। श्री पंत ने दिनांक 19 अक्टूबर 1978 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की आजीवन सदस्यता ग्रहण की थी। वे एक लम्बे समय तक संघ के सह-सचिव एवं संयुक्त सचिव रहने के पश्चात सन् 2005 से 2008 तक संघ के कोषाध्यक्ष भी रहे। एक अधिवक्ता के नाते सामाजिक विषयों के बारे में उनकी गहरी समझ थी जिसका उन्होंने आजीवन शिक्षा संस्थाओं के विकास में भरसक उपयोग किया। वे संघ की गतिविधियों में सपरिवार उत्साह के साथ भाग लेते रहे। समस्त प्रौढ़ शिक्षा परिवार दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करता है।



### भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की म.प्र. शाखा का पुनर्गठन

दिनांक 27 दिसंबर 2020 को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली की मध्य प्रदेश शाखा का पुनर्गठन किया गया जिसमें श्री मृगाल पंत, अध्यक्ष, श्री नारायण चौहान, सचिव, सुश्री रेखा द्विवेदी, कोषाध्यक्ष तथा श्री योगेन्द्र मिश्रा, श्री रामदयाल झूरिया, डॉ. बी. एस. बघेल, श्री सत्यम सम्राट, श्री सहदेवसिंह चौहान, श्री सरबजीतसिंह गिल, श्रीमती मधु श्रीवास्तव एवं श्री आशीष बर्थवाल को सदस्य मनोनीत किया गया।

### श्रीमती इन्दिरा पुरोहित राजस्थान शाखा की संयोजक मनोनीत

हाल ही में श्रीमती इन्दिरा पुरोहित को भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की राजस्थान प्रदेश शाखा का संयोजक नियुक्त किया गया। नवगठित प्रबन्ध समिति में डॉ. के.बी. शर्मा, डॉ. दामिनी चौधरी, डॉ. सुभाष पुरोहित एवं श्री श्याम महर्षि को उपाध्यक्ष, इ.आर. अब्दुल अजीज खान को कोषाध्यक्ष, श्री दीपक कुमार योगी, श्री आशीष नंदवाना, डॉ. दिलीप सिंह चौहान, सुश्री शगुप्ता खान, श्री बलवन्त सिंह चिराना, डॉ. रामेश्वरी चौधरी एवं श्री सज्जन राज मेहता को सचिव तथा श्रीमती नीलम आजाद, डॉ. बीना सिंह, डॉ. सीमा कश्यप, श्रीमती रचना सिद्धा, डॉ. मदन लाल शर्मा, श्री आर. पी. गुप्ता, डॉ. रमेश शर्मा, डॉ. करुणा जोशी एवं श्री रमेश कुमार यादव को सदस्य के तौर पर नियुक्त किया गया।

## SDG India Index 2020-21 released by NITI Aayog

The third edition of the SDG India Index 2020-2021 report was released by NITI Aayog on June 3, 2021. This report has been developed by NITI Aayog in collaboration with the United Nations India to track the progress of all states and Union Territories (UTs) towards achieving Sustainable Development Goals 2030. The progress made by the states is tracked on 115 indicators aligned to the Ministry of Statistics and Programme Implementation's National Indicator Framework (NIF) covering 70 SDG targets reflecting upon 16 out of the 17 SDG Goals. The Goal wise scores on the 16 SDGs for each State and Union Territory have been computed between ranges 0-100, and if a State/UT achieves a score of 100, it signifies it has achieved the 2030 targets. The higher the score of a State/UT, the greater the distance to target achieved. Accordingly, States and Union Territories are classified into Aspirant (0-49), Performer (50-64), Front-Runner (65-99) and Achiever (100). Consequently it has become the primary tool for monitoring progress on the SDGs in the country.

NITI Aayog's think tank working on the subject has hailed this to be an improvement over the 2018-19 and 2019-20 editions of the index, which had utilized 62 indicators across 39 targets and 13 Goals, and 100 indicators across 54 targets and 16 Goals, respectively.

The 2020-21 index showed that the country's overall SDG score has improved by six points from 60 in 2019 to 66 in 2020. The positive change is largely driven by exemplary nationwide performance in Goal 6 (clean water and sanitation) and Goal 7 (affordable and clean energy). As per the report Kerala is leading with a score of 75 followed by Himachal Pradesh and Tamil Nadu (74 each), Andhra Pradesh, Goa, Karnataka and Uttarakhand (72 each), Sikkim (71) and Maharashtra (70).

The worst-performing states and UTs include Chhattisgarh, Nagaland and Odisha with a score of 61 each

followed by Arunachal Pradesh, Meghalaya, Rajasthan and Uttar Pradesh (60), Assam (57), Jharkhand (56) and Bihar (52).

Few states have performed excellently with respect to specific goals. They are as follows:

Goal 1 (no poverty): Tamil Nadu and Delhi

Goal 2 (zero hunger): Kerala and Chandigarh

Goal 3 (good health and well-being): Gujarat and Delhi

Goal 4 (quality education): Kerala and Chandigarh

Goal 5 (gender equality): Chhattisgarh and Andaman and Nicobar Islands

Goal 6 (clean water and sanitation): Goa and Lakshadweep

Goal 7 (affordable and clean energy): Andhra Pradesh, Goa, Haryana, Himachal Pradesh, Karnataka, Kerala, Maharashtra, Mizoram, Punjab, Rajasthan, Sikkim, Tamil Nadu, Telangana, Uttarakhand, Uttar Pradesh, Andaman and Nicobar Islands, Chandigarh, Delhi, Jammu and Kashmir and Ladakh

Goal 8 (decent work and economic growth): Himachal Pradesh and Chandigarh

Goal 9 (industry, innovation and infrastructure): Gujarat and Delhi

Goal 10 (reduced inequality): Meghalaya and Chandigarh

Goal 11 (sustainable cities and communities): Punjab and Chandigarh

Goal 12 (responsible consumption and production): Tripura, Jammu and Kashmir and Ladakh

Goal 13 (climate action): Odisha and Andaman and Nicobar Islands

Goal 14 (life below water): Odisha

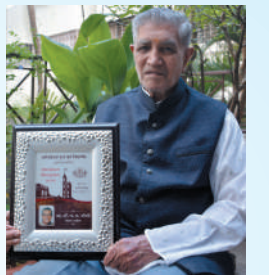
Goal 15 (life on land): Andhra Pradesh and Chandigarh

Goal 16 (peace, justice and strong institutions): Uttarakhand and Puducherry, Mizoram, Haryana, and Uttarakhand are the top gainers in 2020-21 index compared to 2019, with an increase of 12, 10 and 8 points, respectively. In 2019, 10 states and UTs belonged to the category of Front-Runners while this time 12 states and UTs made it to the category.

## A huge recognition to the work done by Dr. N.M. Joshi

Dr. N.M. Joshi, a renowned teacher and Professor of Education got retired from Tilak College of Education, Pune. He is known as a multilingual author and proficient orator in many languages specially English, Marathi, Hindi, Sindhi, Sanskrit and French. To his credit there are 64 books published in Marathi most of which are focused towards the holistic development of children. He is also known for his continued effort to enrich children's literature and inculcation of values through effective story-telling. Recently, he has been felicitated by many notable institutions for his work directed towards

development of the children. On January 10, 2021 he was felicitated by Akhil Bharatiya Marathi Bal-kumar Sahitya Sanstha for this. On February 10, 2021 he was also awarded with the Jeevan Gaurav Award by Savitribai Phule Pune University and on May 27, 2021 he received the Jeevan Gaurav Puruskar from Maharashtra Sahitya Parishad, Pune. Dr. N. M. Joshi is also a Life Member of the Indian Adult Education Association.





## Sakti Da is no more

Shri Sakti Pada Mandal popularly known as Sakti Da is no more. He got infected with Covid-19 and left this world for heavenly abode on May 6, 2021 at the age of 72. Sakti Da was a pioneering figure in the sphere of literacy and lifelong learning, a dedicated social worker, writer and scholar and of course one of the main pillars of mass education and literacy movement in West Bengal. During 70s he actively participated in the land reforms movement going on in the rural areas of West Bengal and played a lead role in eradicating the

superstitious witch-hunting tradition prevailing in the tribal regions of Purulia. He had the privilege of working closely with great leader Shri Sayten Maitra both in the Bengal Social Service League and the State Resource Centre, Kolkata. Later on, after the demise of Shri Maitra, he established the Satyen Maitra Janasiksha Samiti and continued working at the grassroots level with the vision of holistic development through literacy. He left no stone unturned and travelled extensively to almost all the districts of Bengal for the successful implementation of

various literacy related programmes such as NAEP, DPEP, NLM, Sarva Shiksha Abhiyan to name a few. His scholarly contributions in the form of books, especially the Jana-Siksha: Dharonā o Rupayon (Mass Education: Conception and Implementation, in Bengali), articles on literacy, mass education, lifelong learning and numerous speeches delivered in public forums mark his in-depth knowledge, passion and dedication.

It was on August 20, 1988 Sakti Da took the Life Membership of the Indian Adult Education Association



and became a regular participant in all its national activities. As an ever-welcoming and down to earth personality Sakti-da will continue to live through his work and the lives he touched in his personal and professional spheres. The Indian Adult Education Association expresses deep condolences for the departed soul.

## Centenarian Shri Dwariko Sundarani Passed Away



Centenarian Shri Dwariko Sundarani, a recipient of prestigious Jamna Lal Bajaj Award passed away on March 31, 2021 at his residence in Bodh

Gaya, Bihar. Born in Larkana, now in Sindh State of Pakistan he migrated to India at the early age of 18 years only. As an individual committed to the cause of social and community development he worked tirelessly for the welfare of downtrodden, unprivileged and persons having rudimentary or no literacy skills. Non-formal education was his prime tool for raising the quality of life of rural

people and providing education to their children. He had the opportunity to work with Mahatma Gandhi, Sant Vinoba Bhawe, Jai Prakash Narayan, Sundar Lal Bahuguna and many other eminent personalities of national and international repute.

He was the founder and managing trustee of "Samanvay Ashram" Bodh Gaya and an Institutional Member of Indian Adult

Education Association, New Delhi. Inspired by the activities of Netra Jyoti Parivar, Bhansali Trust of Gujarat he organized numerous Eye Cataract Operation camps during last three decades benefiting almost 4 lakh people. His services were recognized not only within the state but at national level too. His Holiness "the 14th Dalai Lama" too used to appreciate his services on many occasions.

## Avik Ghosh died peacefully in sleep

Avik Ghosh, son of the late Dr K.K. Ghosh of Calcutta, died peacefully in his sleep early in the morning on April 13, 2021 at his home on the banks of the Ganges near Rishikesh.

The youngest of five brothers, Avik was the only one, after schooling at St. Xavier's, to move to Delhi at a young age for his studies at St. Stephen's College. As for many of his generation, his five years in residence there were to have an immeasurable impact on him for the rest of his life, and the friendships he formed remained steadfast over almost

six decades, with many of his closest friends and their families also forming strong bonds with his wife Akhila, and their sons.

He studied at the Delhi School of Economics during its heyday as an institution for research and teaching in left-wing economic theory and history, and was taught by, among others, Amartya Sen and Joan Robinson. Strongly influenced by the Keynesian, Marxist, and Naxalite atmosphere of his student circles, he remained committed to the cause of egalitarian social justice throughout his life.



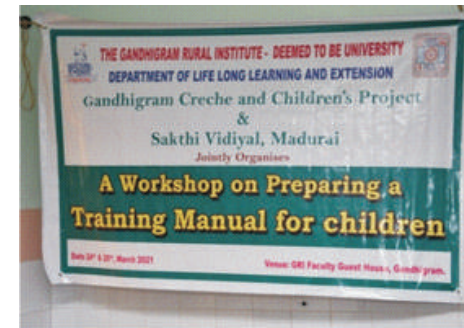
Following his M.A. after a brief period as a producer with All India Radio's youth section—during which he formed lasting ties of mutual respect with a number of artists, writers, and musicians who would go on to reach some prominence—he was one of the founding members of the Centre for the Development of Instructional Technology (CENDIT).

Established in 1972 by a group of like-minded idealists in Delhi, Avik Ghosh, Akhila Iyer

(later Ghosh), Anil Srivastava, Rajive Jain, Joya Roy, Himadri (Jackie) Dhanda, Robert Tyabji, and Narendra Rana, CENDIT went on to be one of the prominent NGOs engaged in developing technologies for social change.

इसी अवधि में हमारे मध्य प्रदेश के सम्मानित आजीवन सदस्य श्री रामेश्वर चौहान, श्री पुरुषोत्तम पंचोली एवं श्रीमती दमयन्ती बुले तथा राज्य संसाधन केन्द्र, जामियाँ मिलिया इस्लामियाँ, नई दिल्ली के निदेशक श्री शहजाद हुसैन का भी निधन हो गया। संघ की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली।

## Workshop to prepare Training Manual for Childcare



Gandhigram Creche and Children's Project run by the Department of Lifelong Learning and Extension, Gandhigram Rural Institute along with Shakti Vidiyal, Madurai organized a workshop on March 24-25, 2021 at Faculty Guest House, GRI for preparing a training manual for childcare. The workshop was participated by 23 persons including 13 Resource Persons associated with both non-governmental and governmental organizations working in the area of Child Rights and Children's Development. Most of the participants were from the districts of Dindigul, Madurai and Coimbatore. The workshop primarily focused on recording memorable childhood experiences of the participants through participatory and activity oriented sessions so that a comprehensive training manual for the functionaries and institutions working in the area of child and adolescent care and their development can be prepared.

At the very outset of the workshop all the participants were welcomed by



Dr. L. Raja, Professor and Head, Department of Lifelong Learning, Dean of the School of Health Sciences and Rural Development and the Principal

Coordinator of Gandhigram Crèche and Children's Project. Addressing the audience he highlighted the theme and many fold objectives of the workshop. Inaugural address was delivered by Dr.



R. Venkataravi, Associate Professor and Member, Board of Management of GRI who emphasized on the primary and secondary environment that plays a significant role in child's development. Dr. Jim Jesudoss, Executive Director of Shakti Vidiyal, Madurai detailed the session-wise structure of the workshop and helped the participants to form four different groups to record the happiest experience, most unhappy experience and an unforgettable incident of their childhood as well as their best teacher in school. This was followed by "Fun with Pillow", a role play. Thereafter, the participants were invited for a couple of brainstorming sessions in which the basic structure of the said training manual for 0-14 and 15-18 age group was prepared.

The technical assistance needed for smooth running of the workshop was provided by Dr. M. Sankaramoorthy, Technical Assistant and Shri P. Venkatesh, Multi-media Technician.

## Dr. L. Raja becomes the President of IAEA

Due to sudden demise of Dr. M. S. Ranawat on April 10, 2021 the office of President, IAEA became vacant and process for electing new President in accordance with the



Rules and Regulations of the Association was set in motion. Consequently, Dr. L. Raja, one of the five elected Vice Presidents of IAEA was unanimously elected as the President of Indian Adult Education Association, New Delhi for the remaining period. Dr. Raja is Professor and Head of the Department, Lifelong Learning & Extension, Gandhigram Rural Institute (Deemed to be University), Dindigul, Tamil Nadu. He will occupy the post till 31.12.2024

## Prof. Rajesh becomes HOD for the Second Term



Prof. Rajesh, Department of Adult, Continuing Education & Extension, University of Delhi and the Vice President of Indian Adult Education Association has been appointed as the Head of the Department for a term of 3 years with immediate effect from March 15, 2021. He brings a wealth of experience to his new role of providing strategic leadership to the department looking for re-designing of the Master's in Lifelong Learning & Extension course in tandem with the New Education Policy 2020, developing a Learning-Outcomes Based Curriculum Framework (LOCF) for the undergraduate programme, fostering national and international partnerships for increasing scope of internships and employability for its students.



# One Day International Webinar on “Leveraging the Role of Higher Education in Lifelong Learning & Extension”

The Department of Adult, Continuing Education and Extension (DACEE), University of Delhi organized an international webinar on “Leveraging the Role of Higher Education in Lifelong Learning & Extension for Sustainability: An Analysis within the Scope of New Education Policy 2020” on May 28, 2021. The webinar was addressed Prof. P.C. Joshi, Vice-Chancellor, University of Delhi, Prof. Paed. Søren Ehlers, from Denmark, Europe; Prof. Vandana Chakrabarti, former Pro Vice-Chancellor, SNDT Women’s University, Mumbai; Prof. L. Raja, Director & Head, Gandhigram Rural Institute, Tamil Nadu and also the President of Indian Adult Education Association, New Delhi and Prof. S.Y. Shah, Director, International Institute of Adult & Lifelong Education, New

Delhi. It was participated by a large number of scholars, faculty members of various higher education institutions, research scholars and students enrolled at national universities. The webinar was convened by Prof. Rajesh, Head of Department, DACEE while Ms. Parinita gave a brief introduction about the intent and objective of the webinar.

Speaking on the occasion Chief Guest Prof. P.C. Joshi emphasized on the importance of lifelong learning which has been further strengthened by its inclusion as a central feature of 2030 Agenda for Sustainable Development, where in Goal 4 calls for “ensuring inclusive and equitable quality education and promote lifelong learning opportunities for all”. He said that the committee instituted for the Implementation of New Education Policy 2020 has also emphasized the role of lifelong learning and multidisciplinary research/innovation in higher education. Recognition of Prior Learning (RPL) and channelizing the informal/non-formal learning, in accordance with formal learning along with enablement of global credit transfers has also been identified as priority sector.

Prof. Søren Ehlers described lifelong learning as a transnational policy tool and provided methodological reflections upon it using the Ehler’s Box Model (2019). He reflected upon the need for a horizontal-vertical integration of a teaching-learning regime.

Prof. Vandana Chakrabarti primarily embarked upon the idea of sustainability (stemming from Sustainable Development Goals), lifelong learning in the context of New Education Policy 2020 and leveraging the role of higher education in lifelong learning. She reiterated the need of holistic education for realization of sustainable development and the transformative power of lifelong learning.

Prof. L. Raja enlightened the gathering about the exceptional work carried out by Gandhigram Rural

Institute in the area of lifelong learning and extension. He reiterated that the institute effectively bridges the cognitive and practical dimensions, and focuses on the holistic development of learners, with an emphasis on skill development through value-based education, rooted in indigenous cultures and traditions. He added that the working philosophy of GRI is based on Mahatma Gandhiji’s idea of bottom to up approach. Further, he stressed upon the need to have an apex body of adult education and lifelong learning at the national level, which can help leverage as well as establish linkages with other institutions for vocational training, human resources, infrastructural support and so on.

Prof. S.Y. Shah accentuated certain aspects of the New Education Policy 2020, which mainly endorses the role of higher education in promotion of lifelong learning. He touched upon the fact that out of 1000 universities in India, only 12 universities offer Master’s programme in Lifelong Learning. Moreover, Professor S.Y. Shah specified nuances of the New Education Policy 2020 that mention a one-year Master’s degree programme and a four-year undergraduate programme. He proposed to launch an undergraduate programme for the discipline of Lifelong Learning (starting with University of Delhi colleges) which caters to the evolving needs of the market, for optimizing employability prospects of students. He also underlined the need to have a multiple entry-exit option in consonance with the New Education Policy 2020, as part of the Learning Outcomes Based Curriculum Framework (LOCF) for the undergraduate level programme.

The webinar was concluded with endorsing few important recommendations for future plan of action. Shri Rahul Yadav, Assistant Professor, DACEE, extended vote of thanks to all the invitees and participants on behalf of the Department.

- Parinita Batra

The poster features the University of Delhi logo and the Department of Adult, Continuing Education & Extension (DACEE). It lists the following speakers and roles:

- Chief Guest:** Prof. P. C. JOSHI, Vice-Chancellor, University of Delhi.
- Guest of Honour:** Prof. K. PARTHASARTHY, Vice-Chancellor, Tamil Nadu Open University.
- Distinguished Speakers:**
  - Dr. Paed. Søren Ehlers, Aarhus University, Denmark.
  - Prof. Vandana Chakrabarti, Former Pro Vice-Chancellor, SNDT Women's University.
  - Prof. S. Y. Shah, Director, International Institute of Adult & Lifelong Education (IAEA).
  - Prof. L. Raja, President, Indian Adult Education Association (IAEA).
- Technical Support:** Rameshwar Gupta, M.Phil. Scholar, DACEE, DU.
- Moderator:** Prof. Rajesh, Departmental Head, DACEE, DU.

The event was held on **28<sup>th</sup> May, 2021** from **04:00 PM - 05:30 PM**. It was a Google Meet session with the link: [MEET.GOOGLE.COM/WCVJURK-VPU](https://meet.google.com/WCVJURK-VPU). The Department of Adult, Continuing Education & Extension, University of Delhi, website is [www.dacee.du.ac.in](http://www.dacee.du.ac.in).

## Obituary

### Professor H.S.Bhola (1932-2021) is no more

Professor H.S. Bhola was one of the renowned scholar in the field of Adult Education who passed away at his home in Indiana (USA) on April 9, 2021. After his Master’s Degree in English Literature and History from Panjab University, he did MS in Education from Indiana University followed by Ph.D from Ohio State University. He started his professional career as Deputy Director of Literacy House, Lucknow in 1966

and subsequently worked as a UNESCO Consultant in East Africa for about two years and then joined the Department of Educational Leadership and Policy Studies at Indiana University, USA as a Faculty Member and served for nearly three decades. He was closely associated with several projects and programmes of UNESCO and published a large number of papers and books. He received the Sixth International

Award for Literacy Research of the UNESCO Institute for Lifelong Learning for his work “Sign Post to Literacy for Sustainable Development” co-authored with Sofia Valdivielso Gomez in 2008. He was closely associated with the Indian Adult Education Association and took keen interest in the activities of IAEA and served as a Distinguished Professor at the International Institute of Adult and Lifelong



Education, New Delhi during 2002-2021. In view of his manifold contributions to the field of Adult Education, IAEA honoured him with Nehru Literacy Award in 2013.

### Departure of a Devoted RTE Activist

Shri Ambarish Rai was a well known social activist who died on May 28, 2021 at Dr. B.R. Ambedkar Hospital in South Delhi due to Covid-19 like symptoms. He dedicated more than a decade of his life to the cause of primary education and the Right to Education Act. He often used to discuss and consult the Office Bearers of IAEA on issues pertaining to education, community and social

development. Born in Mau, Uttar Pradesh Shri Rai studied at Lucknow University where he actively participated in student activism and had been working on issues of human and democratic rights. Since 2010 he was working for Right to Education Forum (RTE Forum) as its National Convener. Shri Rai always advocated for the cause of students and refused to blame them for the

failures of schooling system that often failed to fulfill the basic requirements such as books and availability of teachers. He was a firm believer in no detention policy. At a time when the establishment is pushing for increased testing, learning outcomes, and more private participation, Rai continued to ask for more public funding and participation, especially for marginalized children and



their families. He will be always missed by his friends and activists in academic fraternity.

### Shri Mahbub-Ul-Alam passed away

Shri Mahbub-Ul-Alam, Associate Professor & Head of the Department of Lifelong Learning & Extension, University of North Bengal, Siliguri, West Bengal died on April 20, 2021. Shri Alam became a Life Member of IAEA on August 20, 1988 and used to take immense interest in the activities of IAEA. He was instrumental in

organizing a number of programmes and activities in the department for realizing the goal of adult and lifelong learning education. He also played a vital role in organizing the 63rd All India Adult Education Conference at Siliguri in the campus of the university itself. Recently he got elected as an Executive Member of

IAEA for the period of 2021-2024. Unfortunately, he left the journey in between. The sweet memories of that conference are still alive in mind of all participants of the conference.

IAEA deeply mourns the death and prays the Almighty God to give him peace and courage to his family members to bear



the great loss.